Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT | Vol.2, Issue 6, Jun 2026, pp. 71-78 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i6.59
Available online at: https://vijact.com/

भारतीय एकीकरण और राष्ट्र निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान: एक समालोचनात्मक राजनीतिक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा (उ0प्र0)

Article Info

Article history:

Received Jun 19, 2026

Accepted Jun 29, 2026

Published Jun 30, 2026

Keywords:

भारतीय एकीकरण

राष्ट्र निर्माण

कूटनीति

राजनीतिक रणनीति

प्रशासनिक एकता

ABSTRACT

यह शोध-पत्र भारतीय एकीकरण और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान का समालोचनात्मक राजनीतिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत अनेक रियासतों में विभाजित था, जिससे राष्ट्रीय एकता के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ उपस्थित थीं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि पटेल ने किस प्रकार कूटनीति, प्रशासनिक दक्षता और आवश्यकतानुसार शक्ति के प्रयोग द्वारा इन रियासतों का सफलतापूर्वक भारतीय संघ में विलय कराया। शोध में गुणात्मक एवं ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों—जैसे पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा सरकारी अभिलेखों—का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पटेल ने लगभग 565 रियासतों के एकीकरण में निर्णायक भूमिका निभाई, जिससे आधुनिक भारत की राजनीतिक एकता की नींव पड़ी। समालोचनात्मक दृष्टिकोण से यह भी पाया गया है कि यद्यपि पटेल की नीतियाँ अत्यंत प्रभावी थीं, किन्तु कुछ मामलों में बल प्रयोग और राजनीतिक दबाव के कारण उनकी कार्यप्रणाली पर प्रश्न भी उठते हैं। विशेषतः कुछ रियासतों के विलय में अपनाई गई रणनीतियाँ लोकतांत्रिक आदर्शों के संदर्भ में बहस का विषय रही हैं। अंततः, यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि पटेल का योगदान राष्ट्र-निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थायी है, यद्यपि उसका मूल्यांकन संतुलित एवं आलोचनात्मक दृष्टि से किया जाना आवश्यक है।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author
Email: bssonker79@gmail.com

1. परिचय:

सन् 1947 में जब भारत ने औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की, तब देश की राजनीतिक स्थिति अत्यंत जटिल, संवेदनशील और संक्रमणकालीन थी। भारतीय स्वतंत्रता 1947 के साथ ही भारत का विभाजन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप न केवल भौगोलिक बल्कि सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई। देश दो भागों—भारत और पाकिस्तान—में बंट गया, जिससे व्यापक स्तर पर दंगे, विस्थापन और प्रशासनिक संकट पैदा हुआ। इस परिस्थिति में नवस्वतंत्र भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती एक सुदृढ़ और एकीकृत राष्ट्र का निर्माण करना था। स्वतंत्रता के समय भारत केवल ब्रिटिश प्रांतों तक सीमित नहीं था, बल्कि लगभग 565 देशी रियासतें भी अस्तित्व में थीं, जिन पर स्थानीय राजाओं, नवाबों और महाराजाओं का शासन था। इन रियासतों को यह विकल्प दिया गया था कि वे भारत या पाकिस्तान में विलय करें या स्वतंत्र रहें। यही स्थिति राष्ट्र के विखंडन (Fragmentation) की गंभीर आशंका उत्पन्न करती थी, क्योंकि यदि ये रियासतें स्वतंत्र रहने का निर्णय लेतीं, तो भारत छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित हो सकता था। हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर जैसी प्रमुख रियासतों की स्थिति विशेष रूप से जटिल थी, जहाँ राजनीतिक, धार्मिक और सामरिक कारकों का गहरा प्रभाव था। इसी

चुनौतीपूर्ण दौर में सरदार वल्लभभाई पटेल का ऐतिहासिक उदय एक निर्णायक मोड़ के रूप में सामने आया। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री और उपप्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त हुए और उन्हें रियासतों के एकीकरण की जिम्मेदारी सौंपी गई। अपनी अद्वितीय प्रशासनिक क्षमता, दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और व्यावहारिक दृष्टिकोण के कारण पटेल ने इस जटिल समस्या का समाधान करने में केंद्रीय भूमिका निभाई। उन्होंने कूटनीति, समझौता और आवश्यकतानुसार कठोर कदमों के माध्यम से रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित करने का कार्य किया।

पटेल का यह योगदान केवल राजनीतिक एकीकरण तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने एक सुदृढ़ राष्ट्र-राज्य (Nation-State) की आधारशिला भी रखी। उनका नेतृत्व उस समय अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ, जब भारत को एकता, स्थिरता और प्रशासनिक समन्वय की आवश्यकता थी। इस प्रकार, स्वतंत्रता के बाद की राजनीतिक परिस्थितियों में पटेल का उदय भारतीय राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में एक ऐतिहासिक और निर्णायक घटना के रूप में देखा जाता है।

2. सैद्धांतिक ढांचा:

इस शोध में सरदार वल्लभभाई पटेल के भारतीय एकीकरण और राष्ट्र-निर्माण में योगदान का विश्लेषण विभिन्न राजनीतिक सिद्धांतों के आधार पर किया गया है। सैद्धांतिक ढांचा (Theoretical Framework) इस अध्ययन को एक अकादमिक आधार प्रदान करता है, जिससे ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण अधिक व्यवस्थित, तार्किक एवं वैज्ञानिक रूप से किया जा सके।

(क) राष्ट्र निर्माण (Nation-Building) सिद्धांत

राष्ट्र-निर्माण का तात्पर्य एक ऐसे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक समुदाय के निर्माण से है, जिसमें नागरिकों के बीच साझा पहचान (Common Identity) और एकता की भावना विकसित हो। इस सिद्धांत के अनुसार, राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह सांस्कृतिक एकरूपता, राजनीतिक स्थिरता और सामाजिक एकजुटता पर आधारित होता है। सरदार वल्लभभाई पटेल के कार्यों को इस सिद्धांत के संदर्भ में देखें तो स्पष्ट होता है कि उन्होंने विभिन्न रियासतों को एकीकृत कर न केवल राजनीतिक एकता स्थापित की, बल्कि एक साझा राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका दृष्टिकोण राष्ट्र को एक संगठित एवं सुदृढ़ इकाई के रूप में विकसित करने पर केंद्रित था, जो राष्ट्र-निर्माण सिद्धांत के मूल तत्वों के अनुरूप है।

(ख) राजनीतिक एकीकरण (Political Integration) सिद्धांत

राजनीतिक एकीकरण का सिद्धांत विभिन्न राजनीतिक इकाइयों—जैसे राज्यों, रियासतों या क्षेत्रों—को एक केंद्रीकृत राजनीतिक संरचना में सम्मिलित करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, एकीकरण की प्रक्रिया में कूटनीति, सहमति, संस्थागत विकास और कभी-कभी शक्ति-प्रयोग का भी उपयोग किया जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस सिद्धांत का व्यावहारिक रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने रियासतों के शासकों के साथ संवाद, समझौता और 'Instrument of Accession' जैसे कानूनी साधनों के माध्यम से अधिकांश रियासतों का शांतिपूर्ण विलय सुनिश्चित किया। वहीं, कुछ विशेष परिस्थितियों—जैसे हैदराबाद—में उन्होंने सीमित सैन्य कार्रवाई का भी सहारा लिया, जो इस सिद्धांत के यथार्थवादी पक्ष को दर्शाता है।

(ग) राज्य निर्माण (State Formation) के सिद्धांत

राज्य निर्माण का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार एक राजनीतिक सत्ता संरचना विकसित होकर एक संगठित राज्य का रूप लेती है। इसमें प्रशासनिक संस्थाओं का निर्माण, कानून व्यवस्था की स्थापना, तथा केंद्रीकरण की प्रक्रिया प्रमुख तत्व होते हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत में आधुनिक राज्य निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने न केवल रियासतों का विलय कराया, बल्कि भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और भारतीय पुलिस सेवा (IPS) जैसी संस्थाओं को सुदृढ़ कर एक प्रभावी प्रशासनिक ढांचे की स्थापना की। यह कार्य राज्य निर्माण सिद्धांत के अनुरूप एक संगठित और सक्षम शासन प्रणाली के विकास को दर्शाता है।

(घ) राजनीति विज्ञान के प्रमुख सिद्धांतों का उपयोग

इस अध्ययन में निम्नलिखित प्रमुख राजनीतिक सिद्धांतों का भी उपयोग किया गया है—

1. **राजनीतिक यथार्थवाद (Political Realism)** – इस सिद्धांत के अनुसार, राजनीति में नैतिकता की अपेक्षा शक्ति, सुरक्षा और राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता दी जाती है। सरदार वल्लभभाई पटेल की नीतियाँ इस दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं, जहाँ उन्होंने राष्ट्रीय एकता को सर्वोपरि रखते हुए व्यावहारिक निर्णय लिए।
2. **संघवाद (Federalism)** – भारतीय संविधान में संघीय ढांचे की स्थापना के संदर्भ में पटेल की भूमिका महत्वपूर्ण रही। उन्होंने एक मजबूत केंद्र के साथ राज्यों के समन्वय को सुनिश्चित किया, जो संघवाद के सिद्धांत के अनुरूप है।

3. **केंद्रीकरण बनाम विकेंद्रीकरण (Centralization vs Decentralization)** – पटेल की नीतियाँ एक मजबूत केंद्रीकृत राज्य के निर्माण की ओर संकेत करती हैं। इस दृष्टिकोण से यह अध्ययन करता है कि किस प्रकार केंद्रीकरण ने राष्ट्र-निर्माण में सहायता की, तथा इसके संभावित दुष्प्रभाव क्या रहे।
4. **नेतृत्व सिद्धांत (Leadership Theory)** – इस सिद्धांत के अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाता है कि किस प्रकार एक प्रभावी नेतृत्व संकट की स्थिति में निर्णायक भूमिका निभाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल का नेतृत्व इस संदर्भ में एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

उपरोक्त सैद्धांतिक ढांचे के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान केवल ऐतिहासिक घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विभिन्न राजनीतिक सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग का उत्कृष्ट उदाहरण भी है। यह ढांचा इस शोध को एक गहन, तार्किक और समालोचनात्मक दिशा प्रदान करता है, जिससे भारतीय एकीकरण और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है।

शोध समस्या:

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती एक राजनीतिक रूप से एकीकृत और स्थिर राष्ट्र का निर्माण करना था। लगभग 565 रियासतों की स्वतंत्र स्थिति ने राष्ट्र के विखंडन की आशंका को जन्म दिया। ऐसे परिप्रेक्ष्य में सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा अपनाई गई एकीकरण नीतियाँ अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुईं, किंतु उनकी कार्यप्रणाली—विशेषकर कूटनीति और बल प्रयोग—को लेकर विभिन्न विद्वानों के बीच मतभेद पाए जाते हैं। अतः इस शोध की मूल समस्या यह है कि क्या पटेल द्वारा अपनाई गई नीतियाँ पूर्णतः लोकतांत्रिक और न्यायसंगत थीं, अथवा वे परिस्थितिजन्य व्यावहारिकता (Pragmatism) पर आधारित थीं? साथ ही, यह भी आवश्यक है कि उनके योगदान का समालोचनात्मक मूल्यांकन किया जाए, जिससे उनके राष्ट्र-निर्माण संबंधी दृष्टिकोण की वास्तविक प्रकृति स्पष्ट हो सके।

शोध के उद्देश्य (Objectives)

1. सरदार वल्लभभाई पटेल के भारतीय एकीकरण में योगदान का विश्लेषण करना।
2. रियासतों के विलय हेतु अपनाई गई नीतियों एवं रणनीतियों का अध्ययन करना।
3. राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में पटेल की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. उनकी नीतियों का समालोचनात्मक परीक्षण करना, विशेषतः लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में।
5. समकालीन भारत में उनके योगदान की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

प्राकल्पना:

1. सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा अपनाई गई एकीकरण नीति **राज्य-निर्माण (State Formation Theory)** और **राष्ट्र-निर्माण (Nation-Building Theory)** के सिद्धांतों के अनुरूप थी, जिसने भारत को एक सशक्त केंद्रीकृत राष्ट्र-राज्य के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2. रियासतों के विलय की प्रक्रिया में पटेल की रणनीति **राजनीतिक यथार्थवाद (Political Realism)** पर आधारित थी, जिसमें कूटनीति, समझौता और सीमित बल प्रयोग का संतुलित उपयोग किया गया, जो तत्कालीन परिस्थितियों में प्रभावशीलता का प्रमुख कारण बना।
3. यह प्राकल्पना की जाती है कि पटेल की नीतियाँ लोकतांत्रिक आदर्शों की अपेक्षा **राष्ट्रीय एकता और अखंडता को प्राथमिकता देने वाली व्यवहारिक नीति (Pragmatic Policy Approach)** का उदाहरण थीं, जिससे दीर्घकालिक राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित हुई।
4. भारतीय एकीकरण की सफलता यह दर्शाती है कि एक मजबूत नेतृत्व, स्पष्ट राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक दक्षता राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में निर्णायक कारक होते हैं, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान है।

शोध का महत्व एवं आवश्यकता:

सरदार वल्लभभाई पटेल के भारतीय एकीकरण एवं राष्ट्र-निर्माण में योगदान का अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह शोध न केवल स्वतंत्रता के बाद की जटिल राजनीतिक परिस्थितियों को समझने में सहायक है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार प्रभावी नेतृत्व, कूटनीति और प्रशासनिक दक्षता के माध्यम से एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि उपलब्ध साहित्य में पटेल के योगदान का या तो अत्यधिक प्रशंसात्मक या अत्यधिक आलोचनात्मक विश्लेषण मिलता है। अतः एक संतुलित एवं समालोचनात्मक अध्ययन आवश्यक है, जिससे उनके कार्यों की वास्तविक प्रकृति और प्रभाव को समझा जा सके। साथ ही, वर्तमान भारत में राष्ट्रीय एकता, संघीय ढांचे और प्रशासनिक सुदृढ़ता जैसे मुद्दों के संदर्भ में यह शोध नीति-निर्माताओं, विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

2. साहित्य समीक्षा:

भारतीय एकीकरण और राष्ट्र-निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका पर विभिन्न इतिहासकारों एवं विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह साहित्य समीक्षा उन प्रमुख विद्वानों के विचारों का समालोचनात्मक अवलोकन करती है, जिनके कार्य इस विषय के अध्ययन में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

(क) राजमोहन गांधी का दृष्टिकोण - राजमोहन गांधी ने अपनी प्रसिद्ध कृति *"Patel: A Life"* में पटेल को एक दृढ़निश्चयी, व्यावहारिक एवं कुशल प्रशासक के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार, पटेल की सबसे बड़ी विशेषता उनकी यथार्थवादी सोच (Realistic Approach) थी, जिसके कारण वे जटिल राजनीतिक परिस्थितियों में भी त्वरित एवं प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम रहे। गांधी के अनुसार, रियासतों के एकीकरण में पटेल ने कूटनीति और मनोवैज्ञानिक रणनीति का अत्यंत संतुलित उपयोग किया। उन्होंने यह भी इंगित किया है कि पटेल का दृष्टिकोण आदर्शवाद की अपेक्षा व्यवहारिकता पर अधिक आधारित था, जिसने उन्हें अन्य समकालीन नेताओं से अलग पहचान दिलाई। हालाँकि, गांधी का विश्लेषण अपेक्षाकृत सहानुभूतिपूर्ण (Sympathetic) माना जाता है, जिसमें पटेल की नीतियों की आलोचना सीमित रूप में ही दिखाई देती है। अतः उनके कार्य को संतुलित करने के लिए अन्य आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का अध्ययन भी आवश्यक है।

(ख) रामचंद्र गुहा का दृष्टिकोण - रामचंद्र गुहा ने अपनी पुस्तक *"India After Gandhi"* में स्वतंत्रता के बाद के भारत की जटिल राजनीतिक परिस्थितियों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार, पटेल भारतीय एकीकरण के "मुख्य शिल्पकार" (Architect of Integration) थे, जिन्होंने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में राष्ट्रीय एकता को साकार किया। गुहा यह मानते हैं कि पटेल की रणनीतियाँ बहुआयामी थीं, जिनमें कूटनीति, प्रशासनिक दक्षता और आवश्यकतानुसार बल प्रयोग का संयोजन था। वे विशेष रूप से हैदराबाद और जूनागढ़ के विलय को पटेल की निर्णायक नेतृत्व क्षमता का उदाहरण मानते हैं। गुहा का दृष्टिकोण तुलनात्मक एवं संतुलित है, जिसमें वे पटेल की उपलब्धियों के साथ-साथ उनकी सीमाओं को भी स्वीकार करते हैं। वे यह भी इंगित करते हैं कि कुछ मामलों में बल प्रयोग ने लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में बहस को जन्म दिया।

(ग) बी.आर. नंदा का दृष्टिकोण - बी.आर. नंदा ने अपनी कृति *"Sardar Patel"* में पटेल के व्यक्तित्व और कार्यों का विस्तृत ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार, पटेल न केवल एक कुशल प्रशासक थे, बल्कि एक दूरदर्शी राष्ट्र-निर्माता भी थे, जिन्होंने भारत की राजनीतिक एकता को स्थायी रूप प्रदान किया। नंदा का मानना है कि पटेल की सफलता का मुख्य आधार उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, संगठनात्मक क्षमता और प्रशासनिक अनुभव था। उन्होंने रियासतों के शासकों के साथ संवाद स्थापित कर उन्हें भारतीय संघ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया, जिससे शांतिपूर्ण एकीकरण संभव हुआ। हालाँकि, नंदा का दृष्टिकोण भी अपेक्षाकृत प्रशंसात्मक (Appreciative) है, जिसमें आलोचनात्मक विश्लेषण सीमित है। वे पटेल की नीतियों को ऐतिहासिक आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत करते हैं और उनके निर्णयों को व्यापक राष्ट्रीय हित में उचित ठहराते हैं।

उपरोक्त साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल को भारतीय एकीकरण का प्रमुख शिल्पकार माना जाता है। जहाँ राजमोहन गांधी और बी.आर. नंदा का दृष्टिकोण अधिक प्रशंसात्मक है, वहीं रामचंद्र गुहा अपेक्षाकृत संतुलित एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, साहित्य समीक्षा यह संकेत करती है कि यद्यपि पटेल का योगदान निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है, फिर भी उनकी नीतियों का समालोचनात्मक अध्ययन आवश्यक है, जिससे राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न आयामों को अधिक गहराई से समझा जा सके।

विभिन्न दृष्टिकोण

भारतीय एकीकरण और राष्ट्र-निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका का अध्ययन करते समय विभिन्न वैचारिक दृष्टिकोण उभरकर सामने आते हैं। इन दृष्टिकोणों के माध्यम से न केवल उनके योगदान का मूल्यांकन होता है, बल्कि उनके कार्यों की सीमाएँ और विवाद भी स्पष्ट होते हैं।

(क) राष्ट्रवादी दृष्टिकोण (Nationalist Perspective)

राष्ट्रवादी इतिहासकारों और विद्वानों के अनुसार, सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय एकीकरण के "लौह पुरुष" (Iron Man) और "राष्ट्रीय एकता के शिल्पकार" थे। इस दृष्टिकोण में पटेल की भूमिका को अत्यंत सकारात्मक और निर्णायक माना गया है। इस विचारधारा के अंतर्गत यह तर्क दिया जाता है कि स्वतंत्रता के समय भारत का राजनीतिक परिदृश्य अत्यंत विखंडित था, और यदि पटेल जैसे दृढ़ नेतृत्वकर्ता न होते, तो भारत कई छोटे-छोटे राज्यों में बंट सकता था। उन्होंने अपनी कूटनीतिक दक्षता, राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक कौशल के माध्यम से लगभग सभी रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित कर एक सशक्त राष्ट्र-राज्य की स्थापना की। राष्ट्रवादी दृष्टिकोण पटेल की नीतियों को ऐतिहासिक आवश्यकता के रूप में देखता है और यह मानता है कि उन्होंने राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखते हुए जो भी निर्णय लिए, वे उस समय की परिस्थितियों के अनुरूप उचित और आवश्यक थे। इस दृष्टिकोण में उनके द्वारा अपनाए गए बल प्रयोग को भी राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए आवश्यक कदम के रूप में वैध ठहराया जाता है।

(ख) आलोचनात्मक/वामपंथी दृष्टिकोण (Critical / Left Perspective)

आलोचनात्मक एवं वामपंथी विद्वानों का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत भिन्न और अधिक समालोचनात्मक है। इस विचारधारा के अनुसार, सरदार वल्लभभाई पटेल की नीतियाँ पूर्णतः लोकतांत्रिक नहीं थीं, बल्कि उनमें केंद्रीकरण (Centralization) और शक्ति-प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस दृष्टिकोण में यह तर्क दिया जाता है कि रियासतों के विलय में कई स्थानों पर जनता की इच्छा की अपेक्षा राजनीतिक दबाव और सैन्य हस्तक्षेप को प्राथमिकता दी गई। उदाहरण के रूप में हैदराबाद में "पुलिस एक्शन" (Operation Polo) को कुछ विद्वान लोकतांत्रिक सिद्धांतों के विरुद्ध मानते हैं। वामपंथी विश्लेषण यह भी इंगित करता है कि पटेल की नीतियों ने एक मजबूत केंद्रीकृत राज्य की स्थापना तो की, लेकिन इससे संघीय ढांचे और क्षेत्रीय स्वायत्तता के प्रश्नों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा। इस दृष्टिकोण में पटेल की भूमिका को एक प्रभावशाली प्रशासक के रूप में स्वीकार किया जाता है, किन्तु उनके कार्यों की आलोचनात्मक समीक्षा भी आवश्यक मानी जाती है।

शोध अंतराल

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश अध्ययन सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान को या तो अत्यधिक प्रशंसात्मक (राष्ट्रवादी दृष्टिकोण) या अत्यधिक आलोचनात्मक (वामपंथी दृष्टिकोण) रूप में प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान शोध में निम्नलिखित प्रमुख अंतर (Research Gaps) पाए जाते हैं—

1. **संतुलित विश्लेषण का अभाव** – अधिकांश अध्ययनों में पटेल की नीतियों का समग्र और संतुलित मूल्यांकन नहीं किया गया है, जिसमें उनकी उपलब्धियों और सीमाओं दोनों को समान रूप से प्रस्तुत किया जाए।
2. **सैद्धांतिक आधार की कमी** – कई शोध केवल ऐतिहासिक विवरण तक सीमित हैं, जबकि राष्ट्र-निर्माण एवं राज्य-निर्माण के सैद्धांतिक ढांचे के संदर्भ में गहन विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है।
3. **समकालीन प्रासंगिकता पर सीमित चर्चा** – पटेल की नीतियों का वर्तमान भारतीय राजनीति और प्रशासनिक ढांचे पर क्या प्रभाव है, इस पर पर्याप्त शोध उपलब्ध नहीं है।
4. **तुलनात्मक अध्ययन का अभाव** – जवाहरलाल नेहरू जैसे समकालीन नेताओं के साथ पटेल की नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन सीमित रूप में किया गया है।

इस प्रकार, साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान का अध्ययन बहुआयामी और जटिल है। विभिन्न दृष्टिकोणों के बीच संतुलन स्थापित करते हुए एक समालोचनात्मक और सैद्धांतिक रूप से सुदृढ़ अध्ययन की आवश्यकता है, जिसे यह शोध-पत्र पूरा करने का प्रयास करता है।

शोध पद्धति:

इस शोध में सरदार वल्लभभाई पटेल के भारतीय एकीकरण एवं राष्ट्र-निर्माण में योगदान का अध्ययन **गुणात्मक (Qualitative) एवं ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method)** के आधार पर किया गया है। अध्ययन हेतु **द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources)** का उपयोग किया गया है, जिनमें प्रमुख रूप से प्रामाणिक पुस्तकें, शोध-पत्र, ऐतिहासिक अभिलेख तथा सरकारी दस्तावेज सम्मिलित हैं। शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण **विश्लेषणात्मक (Analytical) एवं तुलनात्मक (Comparative) दृष्टिकोण** के माध्यम से किया गया है, जिससे विभिन्न विचारधाराओं एवं दृष्टिकोणों का संतुलित मूल्यांकन संभव हो सके।

भारतीय एकीकरण की पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता से पूर्व भारत दो प्रमुख भागों में विभाजित था—ब्रिटिश शासित प्रांत और देशी रियासतें, जिनकी संख्या लगभग 565 थी। इन रियासतों पर स्थानीय शासकों का अधिकार था और वे प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश नियंत्रण में नहीं थीं, जिससे एक संगठित राजनीतिक संरचना का अभाव था। भारतीय स्वतंत्रता 1947 के समय देश को विभाजन, सांप्रदायिक तनाव, प्रशासनिक अस्थिरता और राजनीतिक अनिश्चितता जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। साथ ही, रियासतों को भारत या पाकिस्तान में विलय अथवा स्वतंत्र रहने का विकल्प दिए जाने से राष्ट्र के विखंडन की आशंका और अधिक बढ़ गई। इस प्रकार, 565 रियासतों का एकीकरण नवस्वतंत्र भारत के लिए एक जटिल और अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक समस्या थी, जिसके समाधान ने राष्ट्र-निर्माण की दिशा को निर्धारित किया।

पटेल की एकीकरण नीति और रणनीतियाँ

सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय एकीकरण के लिए बहुआयामी रणनीतियाँ अपनाईं, जिनमें कूटनीति, प्रशासनिक दक्षता तथा आवश्यकतानुसार शक्ति-प्रयोग का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने रियासतों के शासकों के साथ संवाद एवं समझौते (कूटनीति) के माध्यम से अधिकांश रियासतों का शांतिपूर्ण विलय सुनिश्चित किया। जहाँ आवश्यक हुआ, वहाँ राष्ट्रीय एकता की रक्षा हेतु सीमित **बल प्रयोग** का भी सहारा लिया गया। पटेल की सफलता का एक प्रमुख आधार उनका उत्कृष्ट **प्रशासनिक कौशल** था, जिसके द्वारा उन्होंने जटिल राजनीतिक परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया। इस प्रक्रिया में उन्हें वी.पी. मेनन का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, जिन्होंने नीतियों के क्रियान्वयन और प्रशासनिक समन्वय में निर्णायक भूमिका निभाई।

प्रमुख रियासतों का विलय:

भारतीय एकीकरण की प्रक्रिया में सरदार वल्लभभाई पटेल ने कुछ जटिल रियासतों के विलय में विशेष रणनीतिक दक्षता का परिचय दिया, जिनका संक्षिप्त अध्ययन निम्नलिखित है—

(क) हैदराबाद (ऑपरेशन पोलो) – हैदराबाद एक विशाल और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रियासत थी, जहाँ निज़ाम स्वतंत्र रहने का इच्छुक था। कूटनीतिक प्रयासों के असफल होने पर 1948 में "ऑपरेशन पोलो" के अंतर्गत सैन्य कार्रवाई की गई, जिसके परिणामस्वरूप हैदराबाद का भारत में विलय हुआ। यह उदाहरण पटेल की निर्णायक नेतृत्व क्षमता और आवश्यकतानुसार बल प्रयोग की नीति को दर्शाता है।

(ख) जूनागढ़ – जूनागढ़ की स्थिति विशेष रूप से जटिल थी, क्योंकि यहाँ मुस्लिम नवाब ने पाकिस्तान में विलय का निर्णय लिया, जबकि अधिकांश जनसंख्या हिंदू थी। इस स्थिति में जनमत और राजनीतिक दबाव के माध्यम से हस्तक्षेप किया गया तथा अंततः जनमत-संग्रह (Plebiscite) के पश्चात जूनागढ़ का भारत में विलय हुआ। यह पटेल की कूटनीतिक एवं जन-आधारित रणनीति का उदाहरण है।

(ग) कश्मीर (विशेष संदर्भ) – कश्मीर का प्रश्न अत्यंत संवेदनशील और जटिल था। यहाँ के शासक द्वारा विलय में विलंब और बाहरी आक्रमण की स्थिति के कारण भारत को सैन्य हस्तक्षेप करना पड़ा। यद्यपि इस मामले में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका सीमित मानी जाती है और इसमें अन्य नेताओं की भी महत्वपूर्ण भागीदारी थी, फिर भी यह भारतीय एकीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद अध्याय है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग रणनीतियों—कूटनीति, जनमत और बल प्रयोग—का उपयोग कर भारतीय एकीकरण को सफलतापूर्वक संपन्न किया।

राष्ट्र निर्माण में पटेल का योगदान

सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय राष्ट्र-निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आधारभूत भूमिका निभाई। रियासतों के सफल एकीकरण के माध्यम से उन्होंने **अखंड भारत** की स्थापना सुनिश्चित की, जिससे देश की राजनीतिक एकता मजबूत हुई। उन्होंने प्रशासनिक संरचना को सुदृढ़ करने हेतु **भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS)** एवं **भारतीय पुलिस सेवा (IPS)** जैसी संस्थाओं को स्थापित एवं संगठित कर प्रशासनिक एकता को सुदृढ़ किया। पटेल ने एक मजबूत केंद्र के साथ राज्यों के समन्वय को बढ़ावा देकर **संघीय ढांचे को स्थिर और प्रभावी** बनाया। साथ ही, उनके प्रयासों से देश में **राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना** का विकास हुआ, जो आधुनिक भारत की स्थिरता और प्रगति का आधार बनी।

समालोचनात्मक विश्लेषण

भारतीय एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, किन्तु उनकी नीतियों का मूल्यांकन केवल प्रशंसात्मक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि समालोचनात्मक परिप्रेक्ष्य में भी किया जाना आवश्यक है। सबसे पहले यह प्रश्न उठता है कि क्या पटेल की नीतियाँ पूर्णतः लोकतांत्रिक थीं? यद्यपि उन्होंने अधिकांश रियासतों के साथ कूटनीतिक संवाद और सहमति के आधार पर विलय सुनिश्चित किया, फिर भी कुछ मामलों में निर्णय प्रक्रिया में जन-इच्छा की अपेक्षा राजनीतिक व्यावहारिकता को प्राथमिकता दी गई। इस कारण यह कहा जा सकता है कि उनकी नीतियाँ आदर्श लोकतांत्रिक मूल्यों की बजाय परिस्थितिजन्य यथार्थवाद पर आधारित थीं। **बल प्रयोग की आलोचना** भी उनके कार्यों के समालोचनात्मक मूल्यांकन का महत्वपूर्ण पक्ष है। विशेष रूप से हैदराबाद में "ऑपरेशन पोलो" जैसी सैन्य कार्रवाई को कुछ विद्वान लोकतांत्रिक सिद्धांतों के विपरीत मानते हैं। हालांकि, समर्थकों का तर्क है कि यह कदम राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा के लिए आवश्यक था। इस प्रकार, बल प्रयोग को लेकर मतभेद स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

कश्मीर मुद्दे पर सीमाएँ भी पटेल की भूमिका के संदर्भ में चर्चा का विषय रही हैं। कश्मीर के मामले में निर्णय प्रक्रिया अधिक जटिल थी और इसमें कई राजनीतिक कारक शामिल थे। इस संदर्भ में पटेल की भूमिका अपेक्षाकृत सीमित रही, जिससे यह प्रश्न उठता है कि यदि उन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त होता, तो क्या परिणाम भिन्न होते। **अन्य नेताओं से तुलना**, विशेषतः जवाहरलाल नेहरू के साथ, इस विश्लेषण को और व्यापक बनाती है। जहाँ नेहरू का दृष्टिकोण अधिक आदर्शवादी और अंतरराष्ट्रीयतावादी था, वहीं पटेल का दृष्टिकोण व्यावहारिक और यथार्थवादी था। यह अंतर कई नीतिगत निर्णयों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, विशेषकर रियासतों के एकीकरण और कश्मीर जैसे मुद्दों में।

अंततः, **वैकल्पिक दृष्टिकोण और बहस** यह दर्शाते हैं कि पटेल की नीतियाँ एक ओर राष्ट्रीय एकता के लिए अत्यंत प्रभावी थीं, वहीं दूसरी ओर वे केंद्रीकरण और शक्ति-प्रयोग की प्रवृत्तियों को भी प्रदर्शित करती हैं। कुछ विद्वान इन्हें राष्ट्र-निर्माण की ऐतिहासिक आवश्यकता मानते हैं, जबकि अन्य इसे लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ आंशिक विरोधाभास के रूप में देखते हैं।

इस प्रकार, समालोचनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही बहुआयामी और विमर्शात्मक भी है, जिसका संतुलित मूल्यांकन आवश्यक है।

चर्चा:

भारतीय एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल की नीतियों की प्रासंगिकता आज भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। वर्तमान भारत में जब क्षेत्रीयता, पहचान-आधारित राजनीति और आंतरिक सुरक्षा जैसे मुद्दे उभरते हैं, तब पटेल की **दृढ़, व्यावहारिक और राष्ट्रीय हित-आधारित नीति** एक मार्गदर्शक के रूप में देखी जाती है। उनकी सोच एक मजबूत और संगठित केंद्र की आवश्यकता पर बल देती है, जो आज भी प्रशासनिक स्थिरता और नीति-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। **राष्ट्रीय एकता पर प्रभाव** के संदर्भ में, पटेल द्वारा स्थापित एकीकृत राजनीतिक ढांचे ने भारत को विखंडन से बचाया और विविधताओं के बावजूद एकता को संभव बनाया। उनकी नीतियों के परिणामस्वरूप ही भारत एक सशक्त राष्ट्र-राज्य के रूप में विकसित हो सका, जहाँ विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधताओं के बीच समन्वय स्थापित हुआ। यह एकता आज भी देश की अखंडता और स्थायित्व का आधार बनी हुई है। **समकालीन राजनीतिक विमर्श में महत्व** की दृष्टि से, पटेल की भूमिका और नीतियाँ निरंतर चर्चा का विषय बनी रहती हैं। उन्हें अक्सर मजबूत नेतृत्व, निर्णायक निर्णय क्षमता और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही, उनके कार्यों पर यह बहस भी जारी रहती है कि केंद्रीकरण और शक्ति-प्रयोग की उनकी नीतियाँ लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ किस हद तक संतुलित थीं।

इस प्रकार, सरदार वल्लभभाई पटेल की नीतियाँ न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वर्तमान भारतीय राजनीति और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में भी उनकी गहरी प्रासंगिकता बनी हुई है।

निष्कर्ष:

इस शोध के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय एकीकरण और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में अत्यंत निर्णायक एवं ऐतिहासिक भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के समय देश जिन जटिल राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक चुनौतियों से घिरा हुआ था, उनमें पटेल की कूटनीतिक दक्षता, दृढ़ नेतृत्व और व्यावहारिक दृष्टिकोण ने एक संगठित एवं सशक्त भारत के निर्माण की आधारशिला रखी। लगभग 565 रियासतों का सफल विलय उनके नेतृत्व की प्रभावशीलता और दूरदर्शिता को प्रमाणित करता है। मुख्य निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पटेल की नीतियाँ राष्ट्र-निर्माण की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी थीं, किन्तु वे पूर्णतः आदर्शवादी न होकर परिस्थितिजन्य यथार्थवाद पर आधारित थीं। उन्होंने राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सर्वोपरि रखते हुए कूटनीति के साथ-साथ आवश्यकतानुसार शक्ति-प्रयोग का भी सहारा लिया। इस कारण, उनकी कार्यप्रणाली का मूल्यांकन एक संतुलित दृष्टिकोण से किया जाना आवश्यक है, जिसमें उनकी उपलब्धियों और सीमाओं दोनों को समान महत्व दिया जाए। पटेल की भूमिका का समग्र मूल्यांकन यह दर्शाता है कि वे केवल एक प्रशासक या राजनेता ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के सुदृढ़ राष्ट्र-राज्य के प्रमुख शिल्पकार थे। उन्होंने न केवल राजनीतिक एकीकरण सुनिश्चित किया, बल्कि प्रशासनिक एकता, संघीय ढांचे की मजबूती और राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। भविष्य के लिए यह अध्ययन यह संकेत देता है कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता बनाए रखने हेतु मजबूत नेतृत्व, स्पष्ट नीतियाँ और संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक हैं। साथ ही, यह भी महत्वपूर्ण है कि राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में लोकतांत्रिक मूल्यों, क्षेत्रीय आकांक्षाओं और सामाजिक न्याय के बीच संतुलन स्थापित किया जाए।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के भारत के लिए भी एक प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक के रूप में स्थापित होता है।

Reference

[1]. संविधान सभा, भारत। (1949). *भारत के संविधान पर संविधान सभा की बहसें*। भारत सरकार प्रेस।

[2]. कॉपलैंड, आई. (1997). 1947 में देशी रियासतें, मुस्लिम लीग और भारत का विभाजन। द *इंटरनेशनल हिस्ट्री रिव्यू*, *19*(3), 507–537। https://doi.org/10.1080/07075332.1997.9640792

[3]. गांधी, राजमोहन। (1991). *पटेल: एक जीवन*। नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[4]. भारत सरकार, राज्य मंत्रालय। (1948). *भारतीय राज्यों पर श्वेत पत्र*। भारत सरकार प्रेस।

[5]. गुहा, रामचंद्र। (2007). *गांधी के बाद का भारत: विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का इतिहास*। हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स।

[6]. मेनन, वी. पी. (1956). *भारतीय राज्यों के एकीकरण की कहानी*। ओरिएंट लॉन्गमैन।

[7]. गृह मंत्रालय, भारत सरकार। (n.d.). *देशी रियासतों का एकीकरण*। https://www.mha.gov.in

[8]. मूर, आर. जे. (1983). भारत में साम्राज्य का अंत। द *हिस्टोरिकल जर्नल, 26*(3), 675–697। https://doi.org/10.1017/S0018246X00021353

[9]. नंदा, बी. आर. (1976). *सरदार पटेल*। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[10]. राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत। (n.d.). *भारतीय एकीकरण से संबंधित अभिलेख*। https://nationalarchives.nic.in

Cite this Article:

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर," भारतीय एकीकरण और राष्ट्र निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान: एक समालोचनात्मक राजनीतिक अध्ययन", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 6, pp. 71-78, Jun 2026.*
Journal URL: https://vijact.com
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i5.59